सुनेहा साडा देवीं श्याम नू कागा कालिया

कागा उडदा उडदा जावीं,
सुनेहा साडा देवीं श्याम नू, कागा कालिया ।
साडी बिरथा आख सुनावीं,
सुनेहा साडा देवीं श्याम नू, कागा कालिया ॥

तेरे बिना रुकी साडी ज़िंदगी दी चाल वे,
तेरी याद कित्ता सानु हाल बेहाल वे ।
आवीं आवीं वे कन्हैया मुड़ आवीं,
सुनेहा साडा देवीं श्याम नू, कागा कालिया ॥

आखीं तेरी याद विच्च रोंदे गावां वछे ने,
गोपी ग्वाल रोंदे, रोंदे मांवा बच्चे ने ।
राधा बाँवरी ते तरस तू ख़ावीं,
सुनेहा साडा देवीं श्याम नू, कागा कालिया ॥

मानसी गंगा गिरिराज गोवर्धन,
सूने मधुवन निधिवन वृन्दावन ।
सुक्की यमुना च जल बरसावीं,
सुनेहा साडा देवीं श्याम नू, कागा कालिया ॥

आखदा 'मधुप' साडे टूट गए ने साज वे,
ना वज्ञे बांसुरी, ना पैंदी किते रास वे ।
रंग बरसीं ते झूले झुलावीं,
सुनेहा साडा देवीं श्याम नू, कागा कालिया ॥

कवि : सुप्रसिद्ध लेखक एवं संकीर्तनाचार्य श्री केवल कृष्ण 'मधुप' (मधुप हरि जी महाराज) अमृतसर (9814668946)
स्वर : सर्व मोहन (टीनू सिंह)

https://bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/1665/title/suneha-sada-devin-shyam-nu-kaga-kaleya

अपने Android मोबाइल पर BhajanGanga App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |